प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

महिलाओं का सशक्तीकरण मानवाधिकार के प्रति सम्मान के साथ जुड़ा हुआ है ...
- महनाज अफखामी

ईरान की नारीवादी कार्यकर्ता

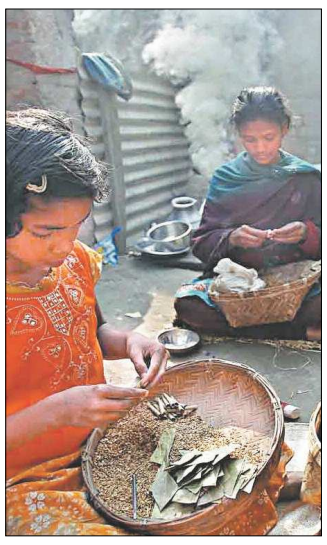

इंदिरा गांधी ने 1971 के आम चुनाव में गरीबी हटाओ का नारा दिया था, और यदि देश की सबसे पुरानी पार्टी को पचास साल बाद इस नारे पर लौटना पड़ रहा है, तो उससे पूछा ही जा सकता है कि यह नौबत क्यों आई?

गरीबी खत्म करने का वादा

कांग्रेस

अध्यक्ष राहुल गांधी ने वायदा किया है कि यदि उनकी पार्टी सत्ता में आती है, तो वह देश के 20 फीसदी सबसे गरीब पांच करोड़ परिवारों को सीधे उनके खाते में सालाना 72 हजार रुपये देगी, ताकि उनकी आय 12,000 रुपये महीने हो सके। उनका यह वादा लोकलुभावन तो है, लेकिन इसने गरीबी के मुद्दे पर बड़ी बहस भी छेड़ दी है। इंदिरा गांधी ने 1971 के आम चुनाव में गरीबी हटाओ का नारा दिया था, और यदि देश की सबसे पुरानी पार्टी को पचास साल बाद इस नारे पर लौटना पड़ रहा है, तो लंबे समय तक सत्ता में रही इस पार्टी से पूछा ही जा सकता है कि यह नौबत क्यों आई? हालांकि यह भी सच है कि पिछले कुछ दशकों में विभिन्न सरकारों के रहते गरीबी कम करने में भारत ने उल्लेखनीय सफलता पाई है, जिसे संयुक्त राष्ट्र सहित अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी स्वीकार किया है। पर चूंकि अब भी बीस फीसदी लोग यानी करीब पच्चीस करोड़ लोग गरीबी में गुजर बसर कर रहे हैं, तो यह कोई छोटी संख्या नहीं है। यह दुनिया में आबादी के मामले में चौथे नंबर के देश इंडोनेशिया (26.4 करोड़) की आबादी से थोड़ा ही कम है! वास्तविकता यह भी है कि सरकारों की कल्याणकारी योजनाओं के साथ ही आर्थिक सुधारों के कारण गरीबी को कम करने में मदद मिली है। बहुत संभव है कि कांग्रेस ने यह चुनावी वादा एनडीए सरकार के किसानों को छह हजार रुपये सालाना देने वाली योजना के जवाब में किया हो। दरअसल गरीबों और किसानों को नकद लाभ देने का विचार नया नहीं है। वैसे भी वृद्धावस्था और निराश्रित पेंशन जैसी योजनाएं वर्षों से चल ही रही हैं। लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष ने जिस योजना की पेशकश की है, वह अमल में आ जाए, तो सब्सिडी के लिहाज से यह सबसे बड़ी योजना साबित होगी। इस योजना को अमल में लाने पर तीन लाख साठ हजार करोड़ रुपये का बोझ आएगा, जबकि केंद्र की अभी दी जा रही कुल सब्सिडी ही 2.99 लाख करोड़ रुपये की हैं। उनका कहना है कि यह देश में गरीबी पर आखिरी प्रहार होगा, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि 'न्याय', यानी न्यूनतम आय योजना के लिए आखिर धन कहां से आएगा? वैसे अभी तो यह देखना बाकी है कि क्या भाजपा भी ऐसी कोई पेशकश करने जा रही है।

आधा आकाश तुम्हारा है

भारतीय राजनीति में लैंगिक न्याय और महिलाओं के सशक्तीकरण की गाथा त्रासदी और विडंबनाओं से भरी है। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी सीटें आरक्षित करने के विधेयक में एक प्रावधान यह भी है कि यह आरक्षण 15 वर्ष बाद समाप्त हो जाएगा। देवगौड़ा शासन में इस विधेयक को 12 सितंबर, 1996 को संसद में पेश किया गया था। बदलाव लाने वाला यह विचार उसके बाईस साल बाद भी वायदे और राजनीतिक पितृसत्ता के बीच फंसा हुआ है।

लैंगिक सशक्तीकरण का मुद्दा एक बार फिर चुनाव प्रचार अभियान में चर्चा में है। इसका श्रेय तृणमूल और बीजू जनता दल को जाता है, जिन्होंने महिला उम्मीदवारों की संख्या बढ़ाई है। सोलहवीं लोकसभा लगातार पांचवीं लोकसभा है, जिसने इस कार्य को अधूरा छोड़ दिया। हालांकि इस बीच लोकसभा चुनाव में महिला प्रत्याशियों की संख्या 274 से बढ़कर 668 हो गई है, जबकि राष्ट्रीय दलों द्वारा नामांकित महिलाओं की संख्या 107 से बढ़कर 146 हो गई है। चुनाव लड़ने वाली लगभग दस फीसदी महिलाएं निर्वाचित होती हैं-यदि वे राष्ट्रीय दलों के टिकट पर चुनाव लड़ती हैं, तो यह आंकड़ा बढ़कर 24 फीसदी हो जाता है और अगर वे राज्य की पार्टियों के टिकट पर चुनाव लड़ती हैं, तो यह आंकड़ा 41 फीसदी हो जाता है। वर्ष 1996 के बाद से महिला सांसदों की संख्या 40 से बढ़कर 62 हो गई है, जबकि महिला मतदाताओं की संख्या 28.2 करोड़ से 43.1 करोड़ हो गई है।

लैंगिक सशक्तीकरण का वातावरण जटिल है। भारत को 1963 में पहली महिला मुख्यमंत्री मिलीं-उत्तर प्रदेश में सुचेता कृपलानी। तबसे 15 महिलाओं (जिनमें मायावती, ममता, जयललिता, महबूबा शामिल हैं) ने कश्मीर से कन्याकुमारी और जयपुर से जादवपुर तक कई बड़ी आबादी वाले और जटिल राज्यों का नेतृत्व किया है। भारत को पहली महिला प्रधानमंत्री 1966 में मिली। महिलाओं ने रक्षा मंत्री, लोकसभा अध्यक्ष की भी भूमिका निभाई और मंत्रिमंडल में आधा दर्जन महिलाएं रही हैं। इसके अलावा स्थानीय एवं राज्य स्तरीय चुनावों में लाखों महिलाएं निर्वाचित हुई हैं।

मताधिकार और सत्ता राजनीति में महिलाओं का होना बहुत जरूरी है। पर अब वक्त आ गया है कि सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण की व्यवस्था हो। आर्थिक स्वतंत्रता ही उन्हें शक्तिशाली बनाएगी।

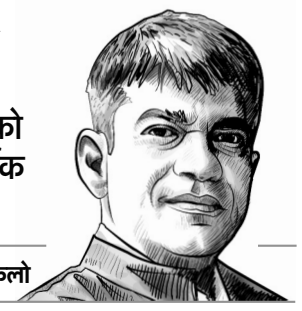

शंकर अय्यर, आईडीएफसी इंस्टीट्यूट में विजिटिंग फेलो

क्या चुनावों में उनकी जीत ने महिलाओं की स्थिति में कोई बदलाव लाया? मताधिकार और सत्ता राजनीति में महिलाओं का होना जरूरी है, पर बदलाव के लिए यही पर्याप्त नहीं है। लैंगिक न्याय और सशक्तीकरण आर्थिक सशक्तीकरण की संस्था की मांग करते हैं। अब वक्त आ गया है कि भारत महिलाओं के लिए सरकारी नौकरियों में 33 फीसदी पद आरक्षित करे। अभिजात वर्ग के लोग तर्क देंगे कि कोटा समानता का विरोधी है। यह खैरात नहीं, बल्कि आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और राजनीतिक सशक्तीकरण की स्थिरता सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण नीतिगत सुधार है। यह सुझाव मैंने फरवरी, 2014 में दिया था, पर 2019 में इसकी जरूरत अधिक है।

भारत अर्थव्यवस्था से महिलाओं के बहिष्कार की त्रासदी को नकार नहीं सकता। नए भारत की कहानी 1991 के उदारीकरण के बाद से ही शुरू होती है। 1990 में कार्यबल में महिलाओं का अनुपात 35 फीसदी था, जो 2018 में घटकर 27 फीसदी रह गया। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन/विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक, 190 देशों में भारत 171वें स्थान पर है। उत्तर प्रदेश में कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र 25 फीसदी है और शहरी क्षेत्रों में तो सिर्फ 15 फीसदी है। उत्तर प्रदेश में मुश्किल से 11 फीसदी महिलाएं ही वेतनभोगी नौकरी करती हैं। इस मामले में भारत की रैंकिंग ओमान, लीबिया और पाकिस्तान के बराबर है, जबकि वह बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, मलयेशिया और ब्रिक्स देशों से पीछे हैं। तर्क दिया जा सकता है कि कृषि और गरीब अर्थव्यवस्थाओं में महिला भागीदारी का उच्च स्तर पर है। लेकिन भारत चीन (122 स्थान), स्वीडन (120 स्थान), सिंगापुर (118 स्थान), जर्मनी (88 स्थान) और यहां तक कि जापान से (53 स्थान) भी पीछे है।

भारत के लिए ज्यादा चिंतनीय बात यह है कि 15 से 24 आयु वर्ग में महिला श्रम भागीदारी 1990 के 30 फीसदी के मुकाबले घटकर 16 फीसदी रह गई है। इस पर एक भ्रामक तर्क दिया जाता है कि आज ज्यादा महिलाएं उच्च शिक्षा हासिल करती हैं। इस तर्क का एक पैमाना है कि कुल कार्यबल में से कितनी महिलाएं उच्च शिक्षा ग्रहण करती हैं और उन लोगों के बारे में क्या विचार है, जिन्होंने पिछले दशक में स्नातक किया था? सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या यह सिद्धांत स्वीडन, चीन या कोरिया या जर्मनी के लिए सही है, जो क्रमशः 56, 45 और 48 फीसदी महिला श्रम भागीदारी का दावा करता है?

अर्थव्यवस्था से महिलाओं के बहिष्कार का हमें आर्थिक खामियाजा भुगतना पड़ा है। आर्थिक सर्वे के मुताबिक 2.95 करोड़ लोग नियोजित क्षेत्र में काम करते हैं, जिनमें 60.05 लाख महिलाएं हैं। इनमें से भी 31 लाख महिलाएं सार्वजनिक क्षेत्र में और 29 लाख निजी क्षेत्र में कार्यरत हैं। यह कोई रहस्य नहीं है कि जब ज्यादा महिलाएं काम करती हैं, तो अर्थव्यवस्था का विकास होता है। चीन की जीडीपी में महिलाओं का योगदान लगभग 41 फीसदी, अमेरिका में 40 फीसदी, पश्चिमी यूरोप में 35 फीसदी है, जबकि भारत में 17 फीसदी ही है। वंचना के बुरे समाजिक परिणाम भी होते हैं। संयुक्त राष्ट्र की 2018 की लैंगिक अनुपात रिपोर्ट बताती है कि लिंगानुपात के मामले में भारत 201 देशों की सूची में 191वें स्थान पर है।

सरकारी नौकरियों में महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण का विरोध संविधान के अनुच्छेदों की व्याख्या करके की जाएगी। पर यह आरक्षण नौकरियों के लिए मौजूदा आरक्षण के भीतर दिया जा सकता है-मंडल तालिका के अनुसार सभी चीजें समान हैं, इसलिए महिलाओं के लिए 33 फीसदी नौकरियां आरक्षित की जा सकती हैं। इससे जाति की गणना नहीं बदलेगी, पर महिलाओं के लिए अवसर बढ़ जाएंगे। निश्चित रूप से इस पर मुकदमेबाजी होगी और सुप्रीम कोर्ट में, जिसने दो महत्वपूर्ण मामलों में महिलाओं के पक्ष में फैसला दिया है, लैंगिक संवेदनशीलता पर उसकी परीक्षा होगी। इन सबके विफल होने पर इस कानून को न्यायिक समीक्षा से रोके रखने के लिए संविधान की नौवीं अनुसूची में रखने का विकल्प है। उम्मीद है कि इसकी जरूरत नहीं होगी। आधा आकाश महिलाओं का है। क्या उन्हें सशक्त किए बिना राजनीति कुछ सार्थक कर सकती है?

अंतर्ध्वनि

>> फिराक गोरखपुरी

काव्य-रचना मानवीय दुख-सुख की व्याख्या है

कवि की हैसियत से मैंने अपना काम कच्ची उम्र में नहीं, बल्कि प्रौढ़ावस्था में शुरू किया। इस बीच मेरा जीवन उजड़ चुका था। इस नाजुक वक्त में कविता आरंभ करते हुए मुझे इस समस्या का सामना करना पड़ा कि जिस शांति और आनंद की ओर मैंने इशारा किया है, उसका समझौता अपने दुखमय जीवन से कैसे करूं। दुख को सुख का संदेश कैसे बनाऊं, यह सिलसिला बहुत धीरे-धीरे कायम हो सका। प्रेम को साहित्य का स्वेच्छाचारी, क्रूर या सर्वशक्तिमान शासक कहा गया है। मेरा पहला काम तो इस देव या दैत्य से समझौता करना था। इस जालिम ने मेरे जीवन पर जो-जो चोटें की थीं या करता जा रहा था, उन्हें मरहम में बदल देना था। मनुष्य की अंतरात्मा जब भीष्म पितामह की तरह घायल हो जाती है, तब शांतिपर्व की बारी आती है। कविता के संसार में धीरे-धीरे मेरा प्रेम-काव्य शांति और सांत्वना प्रदान करने का साधन माना जाने लगा। हर प्रेम-कथा एक दुखांत नाटक होती है। प्रेम की पीड़ाओं को एक ऐसी हालत में बदल देना, जो पीड़ा और दुख की गाथा से ऊपर चला जाए और उसे झुठलाया भी न जाए। भौतिक प्रेम को स्वर्गीय प्रेम बनाना बड़ी कठिन चढ़ाइयों का चढ़ना है। अशांति की सीमाएं पार करने पर ही शांति की सीमाएं आरंभ होती हैं। धर्मराज युधिष्ठिर को भी देवदूत ने पहले नरक के ही दर्शन कराए थे। प्रकृति, बाल-जीवन, नारीत्व, घरेलू जीवन, समाजिक जीवन के मर्म धीरे-धीरे मेरी कविता के विषय बनते गए। मानव की गाथा, सभ्यता की कहानी, इतिहास की महान क्रांतियां भी मेरी कविता में वाणी पाने लगीं और मुखरित होने लगीं। इतिहास की शक्तियां मेरी रचनात्मक शक्तियों को तेजी से अपनी ओर खींचने लगीं। काव्य-रचना व्यक्तिगत दुख-सुख की सूची तैयार करना नहीं है, बल्कि मानवीय दुख-सुख की व्याख्या है।

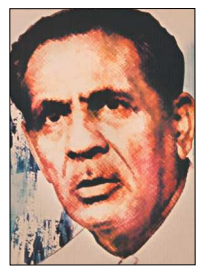

-उर्दू के महत्वपूर्ण रचनाकार

मंजिलें और भी हैं

>> आरिफ एच शेख

लोगों के साथ जुड़कर पुलिस की छवि बदली

मैं एक आईपीएस हूं और पिछले कई साल से छत्तीसगढ़ के अलग-अलग जिलों में काम कर रहा हूं। पुलिस अधिकारी के रूप में मैंने लोगों की समस्याओं को बहुत नजदीक से देखा है। मैं यह भी जानता हूं कि विभिन्न वजहों से समाज में पुलिस की छवि बहुत सकारात्मक नहीं है। खुद सरकार ने पुलिस को जनता के साथ मिलकर काम करने के लिए कम्युनिटी पुलिस जैसी योजना शुरू की है। इसी के तहत हाल के वर्षों में मैंने अपने साथियों के साथ मिलकर कुछ ऐसे कदम उठाए, जिनका उद्देश्य अपराध पर अंकुश लगाने के साथ-साथ पुलिस की छवि सुधारना भी था। सबसे पहले महिलाओं पर होने वाले अपराधों को देखते हुए मैंने कुछ साल पहले 'राखी विद खाकी' नाम का एक कार्यक्रम शुरू किया। इसमें हम अलग-अलग पंचायतों में जाते हैं, लड़कियों-महिलाओं से राखी बंधवाते हैं और उन्हें आत्मविश्वास का मंत्र देते हैं। राज्य के बालोद, बस्तर और बिलासपुर जैसे जिलों में अभी तक इस कार्यक्रम के तहत हमने सैकड़ों महिलाओं की मानसिकता बदलने का काम किया है। हमने उन्हें डर से उबरने, अन्याय का विरोध करने और किसी तरह की परेशानी होने पर पुलिस में शिकायत करने की बात कही है। चूंकि यह कार्यक्रम हम स्थानीय पुलिस के साथ करते हैं, इसलिए इससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ता है। इस इलाके में अब आपको ग्रामीण क्षेत्रों में भी सैकड़ों ऐसी महिलाएं मिलेंगी, जो सेल्फी लेती हैं और व्हाटसएप तथा फेसबुक पर अपनी तस्वीर पोस्ट करती हैं। ऐसे ही सोशल मीडिया के प्रसार के बाद लगातार बढ़ते साइबर अपराध पर अंकुश लगाने के लिए मैंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 'मिशन-ई-रक्षा' की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सोशल मीडिया के प्रति लोगों को सजग करना और साइबर अपराध रोकना है। दरअसल मोबाइल, इंटरनेट और ऑनलाइन ट्रांजेक्शन का चलन बढ़ने के साथ-साथ साइबर अपराधी भी तेजी से सक्रिय हुए हैं। ऐसी कोई जगह नहीं होगी, जहां एटीएम फ्रॉड, सोशल मीडिया अकाउंट हैक करने और फेसबुक पर आपत्तिजनक कंटेट या फोटो पोस्ट करने की शिकायत न आती हो। चूंकि कानून के जरिये इस पर अंकुश लगाना कठिन है, इसीलिए सामाजिक जागरूकता का यह कार्यक्रम स्कूलों और कॉलेजों में शुरू किया गया, क्योंकि युवा पीढ़ी ही मोबाइल और इंटरनेट का सबसे अधिक इस्तेमाल करती है।

मैं खुद को सफल तो तब मानूंगा, जब लोग पुलिस को अपना मित्र समझेंगे और पुलिस का सहयोग करेंगे।

हम छात्रों के बीच पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन देते हैं, स्कूल-कॉलेजों के परिसर में साइबर जागरूकता से संबंधित पोस्टर चिपकाते हैं और फेसबुक पर अलग से जानकारी देते हैं। हमारी इस पहल का बहुत फायदा हुआ है। पहले साइबर क्राइम की बहुत अधिक शिकायतें आती थीं। लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। आंकड़े बताते हैं कि इससे अकेले बालोद जिले में साइबर अपराध 30 प्रतिशत कम हो गए हैं। इसी जिले में हमारे एक और कार्यक्रम 'जीवदया योजना' के कारण दुर्घटनाओं में 28 फीसदी कमी आई है और अनेक लोगों का जीवन बचा है। ऐसे ही हमारी 'पूर्ण शक्ति योजना' से धमतरी जिले में शराब की बिक्री में कमी आई है।

अपने इस काम के लिए कम्युनिटी पुलिसिंग का पहला राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाला मैं पहला पुलिस अधिकारी हूं। पर इसे मैं अपनी उपलब्धि नहीं मानता। मैं खुद को सफल तो तब मानूंगा, जब लोग पुलिस को अपना मित्र समझेंगे और अपराध खत्म करने के लिए पुलिस का सहयोग करेंगे।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

ओसामा का बेटा नया खतरा

पाकिस्तान में छिपे और अल कायदा को दोबारा खड़ा करने की कोशिश में लगे हमजा बिन लादेन की मदद जैश और जमात जैसे आतंकी संगठन कर सकते हैं। इसी कारण मसूद अजहर को वैश्विक आतंकी घोषित करने की कोशिशों का महत्व बढ़ जाता है।

दो मई, 2011 को ओसामा बिन लादेन के पाकिस्तान के अबोटाबाद में अमेरिकी कमांडो द्वारा मारे जाने के बाद अल कायदा मृतप्राय हो गया था, लेकिन अब उसका बेटा हमजा बिन लादेन अपने पिता की विरासत को जिंदा रखने के लिए सक्रिय हो चुका है। चौंकाने वाली बात यह है कि हमजा बिन लादेन 2010 से ही पाकिस्तान में किसी गुप्त स्थान पर रह रहा है और वहीं से अपने पिता ओसामा बिन लादेन की मौत का बदला लेने के लिए मुस्लिम युवकों से आह्वान कर रहा है। 11 सितंबर, 2001 को न्यूयॉर्क और वाशिंगटन डीसी पर किए गए इतिहास के सबसे भीषण आतंकवादी हमले के लिए जिम्मेदार अल कायदा की अगुवाई मिस्र का 67 वर्षीय ऐमन अल जवाहिरी कर रहा है, लेकिन सच यह है कि वह अल कायदा को फिर से खड़ा करने में कामयाब नहीं हो सका। अब अल कायदा को ओसामा के बेटे हमजा बिन लादेन के रूप में एक नया सरगना मिलने जा रहा है।

हमजा के बारे में आतंकवाद के विशेषज्ञ कहते हैं कि वह अंतरराष्ट्रीय आतंक का दूसरा पर्याय बनने की क्षमता रखता है। उनका यह भी मानना है कि फिर से सक्रिय हो रहे अल कायदा के लिए पाकिस्तान काफी उर्वरक जमीन साबित होगा, क्योंकि वहां इन दिनों बीसियों आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं, जो युवकों को जेहादी बनने के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं। इसमें हाफिज सईद का जमात उद दावा और मसूद अजहर का जैश ए मोहम्मद सबसे अधिक जेहादी नए अल कायदा को मुहैया कराने की क्षमता रखते हैं। मसूद अजहर पर प्रतिबंध लगाने के लिए सुरक्षा परिषद के तीन स्थायी सदस्यों फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटेन का इकट्ठा होकर प्रतिबंध लगाने वाले साझा प्रस्ताव पेश करना इसलिए भी काफी महत्व रखता है। इन देशों को इस बात की चिंता है कि यदि जैश ए मोहम्मद और जमात उद दावा को फलने-फूलने दिया गया, तो अमेरिका और यूरोपीय देशों को तबाह करने का लक्ष्य लेकर चलने वाला फिर से खड़ा अल कायदा नया सिरदर्द साबित हो सकता है। दरअसल आईएस के लगभग खत्म हो चुकने के बाद उसके खाली बैठे जेहादी भी अल कायदा में भर्ती होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

रंजीत कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

करीब 30 साल के हमजा का पता बताने वाले के लिए अमेरिका ने दस लाख डॉलर का इनाम घोषित किया है। ऐसे ही सऊदी अरब ने हमजा की सऊदी नागरिकता छीन ली है। माना जा रहा है कि आईएस के मारे गए सरगना अबू बकर अल बगदादी ने जो जगह छोड़ी है, उसे हमजा लादेन भर सकता है। वह नई पीढ़ी के जेहादी युवकों का हीरो बन सकता है। जबकि जवाहिरी दोबारा उभर रहे अल कायदा के लिए वैचारिक मार्गदर्शक बना रह सकता है। हमजा ओसामा बिन लादेन के लड़कों में अकेला है, जो पिता की लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिए दुनिया भर के जेहादियों को एकजुट करने के अभियान पर जुट गया है।

कहते हैं कि ओसामा ने जब अपने बेटों से पूछा था कि उनमें से कौन फिदायीन जेहादी बनने को तैयार है, तब हमजा ने ही हाथ उठाया था। हमजा के अन्य भाई जेद्दा और दोहा में रहते हैं और वे उससे दूरी बनाए हुए हैं। अल कायदा के प्रशिक्षण शिविरों में पले-बढ़े हमजा बिन लादेन को पाकिस्तान की धरती पर जिस तरह शरण मिली हुई है, वह अमेरिका के साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए काफी चिंताजनक है। यदि विश्व समुदाय पाकिस्तान में छिपकर रहने वाले हमजा बिन लादेन को पकड़ने में कामयाब नहीं हुआ, तो आतंकवाद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय लड़ाई कमजोर होगी।

खुली खिड़की

चावल उत्पादन दर में ऑस्ट्रेलिया अव्वल

प्रति हेक्टेयर चावल उत्पादन में ऑस्ट्रेलिया दुनिया में सबसे आगे है, जबकि उसके बाद मिस्र और अमेरिका का स्थान आता है। चीन में जहां यह आंकड़ा प्रति हेक्टेयर 4.7 टन है, वहीं हमारे यहां 2.6 टन है।

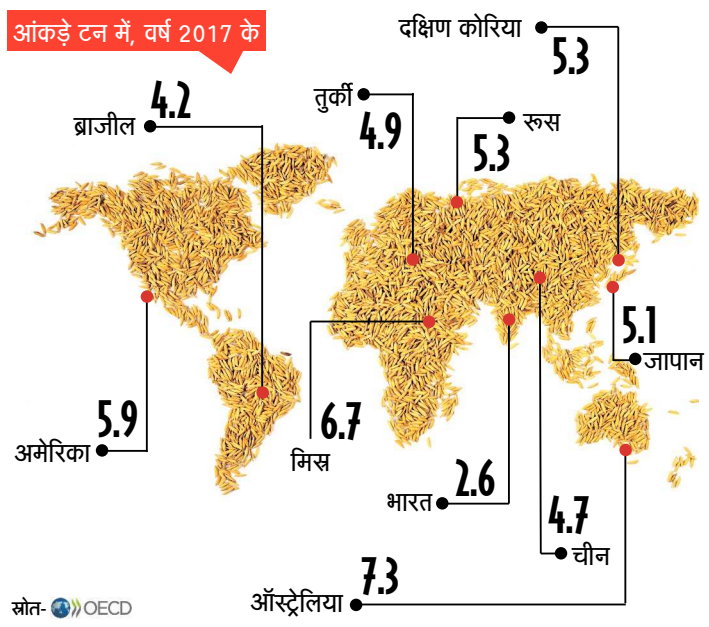

आंख-कान का फर्क

सत्संग

एक गुरुकुल में शिक्षा प्राप्ति के बाद तीन दोस्तों ने दीक्षा लेकर धर्म-कर्म में अपना पूरा जीवन बिताने का निश्चय किया। वे एक आश्रम में पहुंचे, जिसके आचार्य अपनी विद्वता के कारण प्रसिद्ध थे। आचार्य ने कहा, मैं ऐसे ही किसी को दीक्षा नहीं देता। कल सुबह तुम लोगों की परीक्षा लेने के बाद ही दीक्षा देने के बारे में सोचूंगा। रात में उन दोस्तों ने तमाम धर्मशास्त्र उलट-पलट डाले कि सुबह आचार्य न जाने, कहां से प्रश्न पूछ लें। अगले दिन सुबह वे तीनों परीक्षा के लिए उपस्थित हुए। आचार्य ने उनसे जो सवाल पूछा, उसकी उम्मीद तीनों में से किसी को नहीं थी। आचार्य ने पूछा, बताओ, आंख और कान में कितना अंतर है? पहले ने कहा, सिर्फ पांच उंगली का अंतर है, आचार्य। आचार्य ने उसे एक तरफ खड़ा होने के लिए कह दिया। उन्होंने दूसरे से पूछा, तो उसका जवाब था, महाराज, आंख देखती है, जबकि कान सुनते हैं। इसलिए किसी बात की प्रामाणिकता के मामले में आंख का महत्व कान से अधिक है। उसे भी पहले के साथ उन्होंने खड़ा कर दिया। अब तीसरे की बारी थी। उसने कहा, भगवन, कान का महत्व आंख से अधिक है। आंख तो केवल लौकिक जगत को ही देखती है। किंतु कान को पारलौकिक और पारमार्थिक विषयों का पान करने का सौभाग्य मिलता है। महात्मा ने तीसरे को दीक्षा देने का फैसला कर शेष दोनों को उनके घर भेज दिया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

दिनेश, भाई और डॉक्टर

एक डॉक्टर की कहानी, जिसने बेहद मुश्किल क्षणों में भी अपना कर्तव्य निभाया।

दिनेश अपने दफ्तर में था, जब उसके मोबाइल पर कॉल आई कि उसके भाई को किसी कार ने ठोकर मार दी है और उसे अस्पताल ले जाया जा रहा है। अस्पताल पहुंचने पर उसने देखा कि उसका भाई आईसीयू में है। नर्स से पूछने पर पता चला कि उसके भाई की तुरंत सर्जरी करनी पड़ेगी। पर डॉक्टर का फोन नहीं लग रहा था। दिनेश को बहुत गुस्सा आने लगा। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि एक आदमी कुर्ते-पायजामे में दौड़ता चला आ रहा है। उसे देखते ही नर्स उसके पास दौड़ी। दिनेश समझ गया, यही डॉक्टर है। वह उससे झगड़ने लगा, इधर मरीज जिंदगी और मौत से लड़ रहा है और आपको फोन उठाने की भी फुरसत नहीं। नर्स ने दिनेश को चुप रहने का इशारा किया, पर डॉक्टर ने नर्स को चुप करा दिया। वह बोले, आप परेशान न हों। आपके भाई को कुछ नहीं होगा। दिनेश बोला, मैं चुप रहने वाला नहीं। इस जगह पर आपका भाई या बेटा होता, तो आपको पता चलता। थोड़ी देर में ऑपरेशन खत्म हो गया। डॉक्टर दिनेश से बोले, आपका भाई एकदम ठीक है। नर्स आपको बाकी सारी चीजें बता देंगी। मुझे माफ कीजिएगा, थोड़ी जल्दी है। और वह वह वहां से चले गए। दिनेश ने नर्स से कहा, कैसा जल्लाद डॉक्टर है यह। मैं इसे छोड़ूंगा नहीं। नर्स बोली, जिस डॉक्टर को आप जल्लाद बोल रहे हैं, वह अपने भाई को चिता पर छोड़कर आया था, क्योंकि उन्हें आपके भाई की जान बचानी थी। कल रात सड़क दुर्घटना में उनके भाई की मौत हो गई। यह सुनकर दिनेश स्तब्ध रह गया। बिना सोचे-समझे वह डॉक्टर को इतनी बातें सुना गया था। उसे अपने कहे पर जितना अफसोस हो रहा था, उतना ही चकित वह उस डॉक्टर की कर्तव्यपरायणता पर था।

खुद को सही और दूसरे को गलत समझने की आदत हमें बदलनी चहिए।